



SHRI CHINTALAPATI VENKATAPATHI RAJU

Shri Chintalapati Venkatapathi Raju, a grassroots innovator from Etikoppaka village, Anakapalle, Andhra Pradesh, is known for preserving the traditional method of making Etikoppaka toys.

2. Born on 14th May, 1963 at Jonnavalsa, Vijayanagaram, Shri Raju got his secondary education was at Visakhapatnam and Vijayanagaram. He completed his SSC in the year 1979.

3. Shri Raju has developed a variety of contemporary wooden lacquer toys for which a market was gradually emerging in India and abroad. He explored plant sources and the lead-free dyes in their roots, barks, stems, leaves, fruits, seeds and much more. His experiments resulted in natural dye concentrates over wide-ranging colours, including royal red and Indigo. He walked through a strategy of strengthening the local traditions of making vegetable dyes, develop new tools, techniques and methods for increasing the bright range of products. This traditional method of making wooden products and toys by using non-toxic paints and natural dyes, defined the identity of the craft community of the Etikoppaka village in Southern India, which was otherwise a slowly dying art.

4. Shri Raju was supported by National Innovation Foundation (NIF) - for his efforts to be more vocal about local. Financial support was given through Micro Venture Innovation Fund (MVIF) to satisfy working capital needs, setting up of a community lab at the premises of innovator which could facilitate in-situ product improvements, research and development. To strengthen their relevance, the portfolio of innovative products have been made highly interesting, and now, there are a plethora of toy shapes that kids like. Etikoppaka wooden lacquer toys are well rounded and made using natural dye colours. This makes them safe, especially for kids. Keeping this in mind, he remains glued to the conventional art form. Moreover, he engaged his fellow artisans and also provided them with an employment opportunity locally in the same village. For his work on Etikoppaka toys, that is, bringing back the lost glory of local toys, he has been praised by the Hon'ble Prime Minister of India Shri Narendra Modi in his 68th Mann Ki Baat.

5. Shri Raju was conferred with NIF's 2nd Biennial National Grassroots Innovation and Outstanding Traditional Knowledge Award in the year 2002 by former President of India Dr APJ Abdul Kalam. INTACH, Vizag Chapter, 2009 gave him the Lifetime Achievement award. In the year 2018, he was invited to be part of the 5th batch of the Innovation Scholar-In-Residence programme organized by Rashtrapati Bhavan. In 2019, he received the Lifetime Achievement Award from the Craft Council of India, Telangana. He has also participated in the annual Festival of Innovation and Entrepreneurship (FINE), the biggest platform for grassroots innovators to showcase the merit of their innovations, organized by NIF and DST under the aegis of Rashtrapati Bhavan.



श्री चितलपाटि वेंकटपति राजु

श्री चितलपाटि वेंकटपति राजु आंध्र प्रदेश के अनाकापल्ले के एतिकोप्पका गांव के जमीनी स्तर के अन्वेषक हैं जिन्हें एतिकोप्पका खिलौने बनाने की पारंपरिक विधि के संरक्षण के लिए जाना जाता है।

2. 14 मई, 1963 को जोन्नावलसा, विजयनगरम में जन्मे, श्री राजू ने अपनी माध्यमिक शिक्षा विशाखापत्तनम और विजयनगरम में प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 1979 में एसएससी पूरी की।

3. श्री राजू ने रंगे हुए लकड़ी के अनेक किस्म के आधुनिक खिलौने तैयार किए जिनके लिए भारत और विदेश में धीरे-धीरे एक बाजार उभर रहा था। उन्होंने पौधों के स्रोत अर्थात् उनकी जड़ों, छाल, तने, पत्तियों, फलों, बीजों आदि में सीसा मुक्त रंगों का पता लगाया। उनके द्वारा किए गए प्रयोग से सुर्ख लाल और नीले सहित अनेक प्रकार के प्राकृतिक रंग तैयार हुए। उन्होंने वनस्पति रंजक बनाने की स्थानीय परंपराओं को मजबूत करने, उत्पादों की चमकीले रंग की उत्पाद किस्में बढ़ाने के लिए नए-नए उपकरण, तकनीक और तरीके गढ़े। अविषैले पेंट और प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करके लकड़ी के उत्पाद और खिलौने बनाने की इस पारंपरिक विधि से दक्षिण भारत के एतिकोप्पका गांव के शिल्प समुदाय की एक पहचान बनी, अन्यथा यह कला धीरे-धीरे दम तोड़ रही थी।

4. श्री राजू को राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान द्वारा वोकल फॉर लोकल के उनके प्रयासों के लिए मदद की गई थी। कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने के लिए माइक्रो वेंचर इनोवेशन फंड के माध्यम से वित्तीय सहायता दी गई, नवान्वेषक के परिसर में एक सामुदायिक प्रयोगशाला की स्थापना की गई जिससे वहीं पर उत्पाद सुधार, अनुसंधान और विकास की सुविधा मिल सके। खिलौनों का महत्व बढ़ाने के लिए, नए उत्पादों की श्रृंखला को अत्यधिक रोचक बनाया गया है, जिससे बच्चों की पसंद केअलग-अलग आकृतियों के बहुत सारे खिलौने बनने लगे हैं। एतिकोप्पका के रंगे हुए लकड़ी के खिलौने गोलाकार होते हैं और इन्हें प्राकृतिक रंगों का प्रयोग करके बनाया जाता है। इससे ये विशेष रूप से बच्चों के लिए सुरक्षित रहते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, वह पूरे मनोयोग से इस पारंपरिक कला में लगे रहते हैं। इसके अलावा, उन्होंने इस काम में अपने साथी कारीगरों को भी लगाया और उन्हें इसी गांव में रोजगार का अवसर प्रदान किया। एतिकोप्पका खिलौनों पर उनके काम के लिए, यानी स्थानीय खिलौनों के खोए हुए गौरव को वापस लाने के लिए, भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने 68वीं मन की बात में उनकी की प्रशंसा की है।

5. श्री राजू को वर्ष 2002 में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम द्वारा राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान के दूसरे द्विवार्षिक बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय नवप्रवर्तन और उत्कृष्ट पारंपरिक ज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इंटेक, वाइजैग चैप्टर, 2009 द्वारा उन्हें लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार दिया गया। वर्ष 2018 में, उन्हें राष्ट्रपति भवन द्वारा आयोजित इनोवेशन स्कॉलर-इन-रेजिडेंस कार्यक्रम के 5वें बैच का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित किया गया था। वर्ष 2019 में, उन्हें क्राफ्ट काउंसिल ऑफ इंडिया, तेलंगाना की ओर से लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया। उन्होंने राष्ट्रपति भवन के तत्वावधान में राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान और डीएसटी द्वारा आयोजित जमीनी स्तर के नवप्रवर्तकों के लिए अपने नवाचारों की विशेषताओं का प्रदर्शन करने के सबसे विशाल मंच वार्षिक नवाचार और उद्यमिता महोत्सव (फाइन) में भी भाग लिया है।